Vol 2 Issue 1 July 2014 ISSN No: 2321-5488

International Multidisciplinary Research Journal

Research Directions

Editor-in-Chief
S.P. Rajguru

Welcome to Research Direction
ISSN No.2321-5488

Research DirectionJournal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

CHIEF PATRON
Mr. Sanjeev Patil
Chairman :
Central Div. Rayat Shikshan Sanstha, Satara.

PATRON
Suhasini Shan
Chairman -
LMC & Director - Precision Industries, Solapur.

EDITOR IN CHIEF
S.P. Rajguru
Asst. Prof. (Dept. of English) Rayat Shikshan Sanstha's,
L. B. P. Mahila Mahavidyalaya, Solapur. (M.S.)

Sub Editors (Dept. Of Humanities & Social Science)

Dr.Prakash M. Badiger
Guest Faculty,Dept. Of History,
Gulbarga University,Gulbarga.

Nikhilkumar D. Joshi
Gujrat

Dr.kiranjeet kaur

Nikhil joshi
Dept.of English G.H.patel college of
Engineering and Technology,Gujrat.

Advisory Board

S. N. Gosavi
T. N. Kolekar
Suhas Nimbalkar
Ajit Mondal
Shrikant Yelegaonkar
Seema Naik
Adusumalli Venkateswara Raw
Punjabrao Ronge
M. L. Jadhav
Deepa P. Patil
D. R. More
Annie John
R.D.Bawdhankar

Guest Referee

Maryam Ebadi Asayesh
Islamic Azad University, Iran

Judith F. Balares Salamat
Department of Humanities, IASPI, Philippines

Henry Hartono
Soegijapranata Catholic University, Indonesia

Mukesh Williams
University of Tokyo, Japan

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.ror.isrj.net

Research Directions
Volume 2 | Issue 1 | July 2014

ISSN:-2321-5488
Impact Factor : 2.1005 (UIF)

Research Article

माताओं के व्यवसाय की प्रकृति एवं व्यवसाय के स्तर का किशोर बालक–बालिकाओं के आत्म–सम्मान पर प्रभाव का अध्ययन

अमृता सिंह, ,गीता शुक्ला

प्रवक्ता–स्वामी विवेकानन्द महाविद्यालय, गोरखपुर
प्राध्यापक – शा.मो.ह.गृहविज्ञान एवं विज्ञान महिला महा.(स्वशासी),जबलपुर

***सारांश* :-**

प्रस्तुत शोध अध्ययन में माता के व्यवसाय की प्रकृति (प्रशासनिक/शैक्षिक) एवं स्तर (उच्च/मध्य/निम्न) का उनके किशोर बालक–बालिकाओं के स्वप्रत्यक्षीकृत आत्म–सम्मान पर प्रभाव का अध्ययन किया गया है। शैक्षिक एवं प्रशासनिक कार्य करने वाली माताओं पर सामाजिक–आर्थिक स्तर मापनी का प्रशासन कर उनके व्यवसाय को उच्च, मध्य एवं निम्न स्तर में वर्गीकृत किया गया। इन माताओं के 180–180 किशोर बालक–बालिकाओं पर आत्म–सम्मान मापनी का प्रशासन एवं फलाकंन कर प्राप्तांकों का सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया। परिणामों द्वारा ज्ञात हुआ कि किशोर बालिकाओं एवं किशोर बालक–बालिकाओं के सम्मिलित समूह के सकारात्मक एवं नकारात्मक आत्म–सम्मान को माता का शैक्षिक व्यवसाय एवं व्यवसाय का स्तर प्रभावित करता है जबकि माता का शैक्षिक व्यवसाय किशोर बालकों के सकारात्मक एवं नकारात्मक आत्म–सम्मान को प्रभावित नहीं करता है शैक्षिक व्यवसाय वाली माताओं के किशोर बालकों, किशोर बालिकाओं एवं किशोर बालक–बालिकाओं के सम्मिलित समूह के सकारात्मक एवं नकारात्मक आत्म–सम्मान पर माता के शैक्षिक व्यवसाय का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

प्रस्तावना

बच्चों के विकास में माता की अत्यंत अहम भूमिका होती है। आदिकाल से माता को बच्चों का प्रथम गुरू माना गया है एवं घर को प्रथम पाठशाला। ऐसी स्थिति में बच्चों के विकास में माता की भूमिका का महत्व स्पष्ट हो जाता है। वर्तमान समय में अंधाधुंध विकास एवं अत्यधिक प्रतियोगिता ने परिवार के सामने विभिन्न क्लिष्ट परिस्थितियाँ उत्पन्न कर दी हैं। शिक्षा इतनी महंगी हो गई है कि जिन घरों में बच्चे हैं वहां केवल पिता की आय से घर–गृहस्थी चलाना एवं बच्चों की शिक्षा की व्यवस्था करना एक अत्यंत कठिन कार्य हो गया है। ऐसी स्थिति में माताओं को परिवार की विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये घर से बाहर निकल कर कार्य करना एक आवष्यकता बन गई है। व्यक्ति के जीवन की सबसे महत्वपूर्ण अवस्था किशोरावस्था है। इस अवस्था में विकसित व्यक्तित्व एवं व्यक्तित्व पर प्रभावी तत्व जीवनपर्यन्त प्रभावशील होते हैं। अतः अत्यंत आवष्यक है कि किशोरावस्था में किषोरों के सर्वांगीण विकास हेतु व्यवसायरत् माताओं की भूमिका सकारात्मक एवं सफल हो।लीन्ना, एम., मीलॉट एवं शैरोन, सॉसलर (2007) ने माताओं के व्यवसाय एवं बालकों की उपलब्धि पर शोध किया तथा बताया कि जब माता–पिता दोनों ही व्यवसायरत् रहते हैं तब लड़कों तथा लड़कियों दोनों के ही शैक्षणिक उपलब्धि में सार्थक अंतर देखने को मिलता है।

क्रिस्टोफर, जे. (2008) ने "मैटरनल इम्प्लायमेंट एण्ड एडोलसेंट डेवलपमेंट" विषय पर शोध किया तथा बताया कि माता का अधिक समय तक कार्य करना किशोरों के संवेगात्मक विकास, मोटापा तथा अन्य नुकसानदायक व्यवहार को प्रभावित करता है। विशेषकर 4 से 9 वर्ष की अवस्था में, यदि माताएँ अपने कार्य के घंटों में कमी करती हैं तो यह प्रभाव कम देखने को मिलता है।

व्यवसाय का कार्यक्षेत्र व्यवसाय का एक ऐसा पक्ष है जो व्यक्ति के व्यक्तित्व को प्रभावित करता है। उदाहरणतः यदि उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर की महिलायें अधिकारी हैं तो उनके व्यक्तित्व में उच्च कोटि का सम्मान सम्मिलित होगा, इसी प्रकार एक डॉक्टर पेशे की माता सदैव अपने किशोरों के अच्छे स्वास्थ्य के लिए जागरूक रहती है तथा किशोरों के व्यवहार में भी इसी प्रकार की अभिरुचि पायी जाती है। मध्यम वर्ग की षिक्षक माताओं के व्यक्तित्व में

अनुशासन स्वतः पाया जाता है तथा वे अपने किषोरों को भी अनुषासित वातावरण प्रदान करती हैं, जिसका प्रभाव उनके व्यक्तित्व में देखने को मिलता है, इसी प्रकार सुपरवाइज़र पेशे की माता में प्रतिनिधित्व का गुण विद्यमान रहता है तथा वे अपने किशोरों का भी उचित मार्गदर्शन करती हैं। निम्न वर्ग की मजदूर महिला के व्यक्तित्व में श्रम देखने को मिलता है तथा इन माताओं के व्यक्तित्व का अनुसरण उनके किशोर भी करते हैं, वर्तमान समय में एक सफाईकर्मी के किशोर अपनी माँ के इस व्यवसाय को हीन समझते हैं।

इस प्रकार माता के कार्यकारी होने संबंधी उपरोक्त अनुसंधान परिणाम यह स्पष्ट कर रहे कि माता का व्यवसाय, व्यवसाय की प्रकृति – पूर्णकालिक या अंषकालिक होना एवं परिवार की संरचना बच्चों के व्यक्तित्व के विभिन्न पक्षों को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित कर रहे हैं।

उद्देश्य

1.माता के व्यवसाय की प्रकृति (प्रषासनिक/शैक्षिक) का किशोर बालकों/बालिकाओं एवं बालक–बालिकाओं के सम्मिलित समूह के आत्म–सम्मान पर प्रभाव का अध्ययन करना।
2.माता के व्यवसाय की प्रकृति (प्रशासनिक/शैक्षिक) का किशोर बालक एवं बालिकाओं के आत्म–सम्मान पर लिंग भिन्नता का अध्ययन करना।
3.माता के व्यवसाय के स्तर (उच्च/मध्य/निम्न) का किषोर बालकों/बालिकाओं एवं बालक–बालिकाओं के सम्मिलित समूह के आत्म–सम्मान पर प्रभाव का अध्ययन करना।
4.माता के व्यवसाय के स्तर (उच्च/मध्य/निम्न) का किशोर बालक एवं बालिकाओं के स्वप्रत्यक्षीकृत आत्म–सम्मान पर लिंग भिन्नता का अध्ययन करना ।

परिकल्पना

1.माता के व्यवसाय की प्रकृति (प्रशासनिक/शैक्षिक) का किशोर बालकों/बालिकाओं एवं बालक–बालिकाओं के सम्मिलित समूह के आत्म–सम्मान पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।
2.माता के व्यवसाय की प्रकृति (प्रशासनिक/शैक्षिक) का किशोर बालक एवं बालिकाओं के आत्म–सम्मान पर लिंग भिन्नता कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।
3.माता के व्यवसाय के स्तर (उच्च/मध्य/निम्न) का किशोर बालकों/बालिकाओं एवं बालक–बालिकाओं के सम्मिलित समूह के आत्म–सम्मान पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।
4.माता के व्यवसाय के स्तर (उच्च/मध्य/निम्न) का किशोर बालक एवं बालिकाओं के आत्म–सम्मान पर लिंग भिन्नता का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

न्यादर्श

तालिका क्रं – 01

माता के व्यवसाय की प्रकृति	व्यवसाय का स्तर	किशोर बालक	किशोर बालिकाएँ	योग
प्रशासनिक	उच्च स्तर	30	30	60
	मध्य स्तर	30	30	60
	निम्न स्तर	30	30	60
शैक्षिक	उच्च स्तर	30	30	30
	मध्य स्तर	30	30	60
	निम्न स्तर	30	30	60
कुल योग		180	180	360

प्रयुक्त उपकरण

आत्म–सम्मान मापनी –एम.एस.प्रसाद एवं जी.पी.ठाकुर
सामाजिक–आर्थिक स्थिति मापनी –श्री एल.एन. दुबे एवं श्री बी. निगम

प्रदत्त संकलन विधि

न्यादर्श में चयनित उच्च, मध्य एवं निम्न स्तर के शैक्षिक एवं प्रशासनिक व्यवसाय वाली माताओं के 30–30 किशोर बालक एवं बालिकाओं पर आत्म–सम्मान मापनी का प्रशासन किया गया एवं प्राप्तांकों का सांख्यिकीयविश्लेषण किया गया एवं निष्कर्ष प्राप्त किए गए।

परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

तालिका क्रं. 02
विभिन्न स्तर के प्रशासनिक व्यवसाय वाली माताओं के किशोर बालकों, किशोर बालिकाओं एवं किशोर बालक–बालिकाओं के सम्मिलित समूह के आत्म–सम्मान संबंधी तुलनात्मक परिणाम

समूह	आत्म–सम्मान	व्यवसायिक स्तर			'काई' वर्ग	'पी' मान
		उच्च	मध्य	निम्न		
किशोर बालक	सकारात्मक	25	19	21	3.10	>0.05
	नकारात्मक	5	11	9		
किशोर बालिकाएं	सकारात्मक	27	26	19	7.92	<0.05
	नकारात्मक	3	4	11		
किषोर बालक–बालिकाएँ	सकारात्मक	52	45	40	6.66	<0.05

स्वतंत्रता के अंश – 2

0.05 स्तर पर निर्धारित न्यूनतम मान– 5.99
0.01 स्तर पर निर्धारित न्यूनतम मान– 9.21

उपरोक्त सारणी में उच्च, मध्य एवं निम्न स्तर के प्रशासनिक व्यवसाय वाली माताओं के किशोर बालकों के सकारात्मक एवं नकारात्मक आत्म–सम्मान के मध्य अंतर की सार्थकता ज्ञात करने के लिए निकाले गये 'काई' वर्ग का मान 3.10 है जो कि सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक नहीं हैं क्योंकि यह मान 0.05 स्तर पर निर्धारित न्यूनतम मान 5.99 की अपेक्षा कम है। इसके विपरीत उच्च, मध्य एवं निम्न स्तर के प्रशासनिक व्यवसाय वाली माताओं की किशोर बालिकाओं एवं समस्त किशोरों के सकारात्मक एवं नकारात्मक आत्म–सम्मान में सार्थक अंतर है क्योंकि अंतर की सार्थकता ज्ञात करने के लिए 'काई' वर्ग के मान क्रमशः 7.92 एवं 6.66 हैं जो कि 0.05 स्तर पर निर्धारित न्यूनतम मान 5. 99 की अपेक्षा अधिक हैं। किशोर बालिकाओं एवं किशोर बालक–बालिकाओं के सम्मिलित समूह के सकारात्मक एवं नकारात्मक आत्म–सम्मान को माता का प्रशासनिक व्यवसाय एवं व्यवसाय का स्तर प्रभावित करता है जबकि माता के प्रशासनिक व्यवसाय का किशोर बालकों के सकारात्मक एवं नकारात्मक आत्म–सम्मान पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता हैं।

तालिका क्रं. 03
विभिन्न स्तर के शैक्षिक व्यवसाय वाली माताओं के किशोर बालकों, किशोर बालिकाओं एवं समस्त किशोरों के आत्म–सम्मान के तुलनात्मक परिणाम

समूह	आत्म–सम्मान	व्यवसायिक स्तर			'काई' वर्ग	'पी' मान
		उच्च	मध्य	निम्न		
किशोर बालक	सकारात्मक	20	20	19	0.10	>0.05
	नकारात्मक	10	10	11		
किशोर बालिकाएं	सकारात्मक	21	18	23	1.97	>0.05
	नकारात्मक	9	12	7		
किशोर बालक–बालिकाएँ	सकारात्मक	41	38	42	0.66	>0.05
	नकारात्मक	19	22	18		

स्वतंत्रता के अंश – 2

0.05 स्तर पर निर्धारित न्यूनतम मान –5.99
0.01 स्तर पर निर्धारित न्यूनतम मान –9.21

उपरोक्त सारणी में उच्च मध्य एवं निम्न स्तर के शैक्षिक व्यवसाय वाली माताओं के किशोर बालकों, किशोर बालिकाओं एवं उनके सम्मिलित समूह के परिणामों से स्पष्ट होता है कि इनके सकारात्मक एवं नकारात्मक आत्म–सम्मान में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है। क्योंकि अंतर की सार्थकता ज्ञात करने के लिये निकाले गये 'काई' वर्ग के मान क्रमशः 0.10, 1.97 तथा 0.66 हैं। जो कि 0.05 स्तर पर निर्धारित न्यूनतम मान 5.99 की अपेक्षा कम हैं। किशोर बालकों, किशोर बालिकाओं एवं उनके सम्मिलित समूह के सकारात्मक एवं नकारात्मक आत्म–सम्मान पर माता के शैक्षिक व्यवसाय का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

हॉलैण्ड, ए. एवं एन्ड्रे, टी. (1994) ने किशोरों के व्यक्तिगत एवं वातावरणीय स्त्रोतों का किशोरों के आत्म–सम्मान पर प्रभाव का अध्ययन किया। इस शोध में इन्होंने लिंग भूमिका, एथेलेटिक सहभागिता, विद्यार्थियों के व्यवसायिक अभ्यास एवं अभिभावकों के शैक्षिक, व्यवसायिक व वैवाहिक स्थिति, आदि चरों के प्रभाव का अध्ययन किया तथा शोध परिणामों में बताया कि किशोर बालकों की अपेक्षा किशोरियों के आत्म–सम्मान पर इन चरों का सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। सकारात्मक आत्म–सम्मान किशोरों के व्यक्तित्व का वह पक्ष होता है जिसे दूसरे व्यक्तियों द्वारा सराहा जाता है। सकारात्मक आत्म–सम्मान युक्त किशोरों को समाज सरलता से स्वीकारता है, उनसे प्रेम करता है, उन्हें सम्मान प्रदान करता है। इस प्रकार के आत्म–सम्मान से युक्त व्यक्ति आने वाली प्रत्येक समस्या का अपेक्षाकृत अधिक आत्म–विश्वास से सामना करता है। सकारात्मक आत्म–सम्मान द्वारा किशोर समाज में अपनी अलग एवं विशेष पहचान बनाता है। आत्म–सम्मान के निर्माण में माता का योगदान एवं सहयोग अत्यधिक महत्वपूर्ण होता है।

निष्कर्ष

1.प्रशासनिक व्यवसाय वाली माताओं के किशोर बालकों, किशोर बालिकाओं एवं किशोर बालक–बालिकाओं के सम्मिलित समूह के सकारात्मक एवं नकारात्मक आत्म–सम्मान के तुलनात्मक परिणामों से स्पष्ट है कि किशोर बालिकाओं एवं किशोर बालक–बालिकाओं के सम्मिलित समूह के सकारात्मक एवं नकारात्मक आत्म–सम्मान को माता का शैक्षिक व्यवसाय एवं व्यवसाय का स्तर प्रभावित करता है जबकि माता का शैक्षिक व्यवसाय किशोर बालकों के सकारात्मक एवं नकारात्मक आत्म–सम्मान को प्रभावित नहीं करता है।
2.शैक्षिक व्यवसाय वाली माताओं के किशोर बालकों, किशोर बालिकाओं एवं किशोर बालक–बालिकाओं के सम्मिलित समूह के सकारात्मक एवं नकारात्मक आत्म–सम्मान पर माता के शैक्षिक व्यवसाय का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

संदर्भ ग्रंथ

1.जीत, योगेन्द्र (1989) बाल विकास की रूपरेखा विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, द्वितीय संस्करण, पृष्ठ सं. 155–156
2.कपिल, एच.के. (1975) सांख्यिकी के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, पृष्ठ सं. 607
3.कपूर, प्रमिला (1976) भारत में विवाह और कामकाजी महिलायें प्रथम संस्करण
4.माथुर, डॉ.एस.एस. (1976) समाज मनोविज्ञान, विनोद प्रिटिंग प्रेस, आगरा, चतुर्थ संस्करण, पृष्ठ सं. 226–28
5.Cox, C. & Pyszczynski, T. (2004) "Can we really do without self-esteem? Comment on Cooker and Park." Psychogical Bulletin, Volume 130 (3) Page no. 425-429.
6.Dronkers, J. (1989) "Working mothers and the educational achievements of their children, The social world of adolescents international perspectives" Berline, New York. Page no. 185-198.
7.Feldman, R., Olds, S. Papalia, D. (2004) "Human Development" 9th Edition, New Delhi, India Tata Mc Graw – Hill." Page no. – 10-11

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed

- PDOAJ
- Directory of Research Journals Researchbib
- SocioSite
- Tjdb

Frequency: Monthly

International Research Directions Journal

Review & Advisory Board :

Research Directions Journal is seeking scholars.

Those who are interested in our serving as our volunteer Editorial Review Board, Editorial Board and Advisory Board.

Call for editorial board:

All of faculties, experts and researchers are invited to join us as member of editorial board.

For applying, send your CV at researchdirection2013@gmail.com / researchdirection@yahoo.com.

We welcome you in research documentation.

Email: researchdirection2013@gmail.com / researchdirection@yahoo.com

Research Direction Journal
Editor-in-Chief:
Prof. Santosh P. Rajguru
Address for Correspondence
56,'PARASHURAM' Ayodhya Nagari,Near Reliance Office,
Hydrabad Road,Dahitane,
Solapur-413006.(Maharashtra)
Email: researchdirection2013@gmail.com
cell: 9822870742